विनयपत्रिका–पद

(१)

गाइये गनपति जगबंदन ।

संकर-सुवन भवानी-नंदन ।। १ ।।

सिद्धि-सदन, गज-बदन, बिनायक ।

कृपा-सिंधु, सुंदर, सब-लायक ।। २ ।।

मोदक-प्रिय, मुद-मंगल-दाता ।

बिद्या-बारिधि, बुद्धि-बिधाता ।। ३ ।।

माँगत तुलसिदास कर जोरे ।

बसहिं रामसिय मानस मोरे ।। ४ ।।

(१७)

जय जय भगीरथनन्दिनि, मुनि-चय चकोर-चन्दिनि,

नर-नाग-बिबुध-बन्दिनि जय जह्नु बालिका ।

बिस्नु-पद-सरोजजासि, ईस-सीसपर बिभासि,

त्रिपथगासि, पुन्यरासि, पाप-छालिका ।। १ ।।

बिमल बिपुल बहसि बारि, सीतल त्रयताप-हारि,

भँवर बर बिभंगतर तरंग-मालिका ।

पुरजन पूजोपहार, सोभित ससि धवलधार,

भंजन भव-भार, भक्ति-कल्पथालिका ।। २ ।।

निज तटबासी बिहंग, जल-थर-चर पसु-पतंग,

कीट, जटिल तापस सब सरिस पालिका ।

तुलसी तव तर तीर सुमिरत रघुबंस-बीर,

बिचरत मति देहि मोह-महिष-कालिका ।। ३ ।।

(२३)

सब सोच-बिमोचन चित्रकूट । कलिहरन, करन कल्यान बूट ।। १ ।।

सुचि अवनि सुहावनि आलबाल । कानन बिचित्र, बारी बिसाल ।। २ ।।

मंदाकिनि-मालिनि सदा सींच । बर बारि, बिषम नर-नारि नीच ।। ३ ।।

साखा सुसृंग, भूरुह-सुपात । निरझर मधुबर, मृदु मलय बात ।। ४ ।।

सुक, पिक, मधुकर, मुनिबर बिहारु । साधन प्रसून फल चारि चारु ।। ५ ।।

भव-घोरघाम-हर सुखद छाँह । थप्यो थिर प्रभाव जानकी-नाह ।। ६ ।।

साधक-सुपथिक बड़े भाग पाइ । पावत अनेक अभिमत अघाइ ।। ७ ।।

रस एक, रहित-गुन-करम-काल । सिय राम लखन पालक कृपाल ।। ८ ।।

तुलसी जो राम पद चहिय प्रेम । सेइय गिरि करि निरुपाधि नेम ।। ९ ।।

(१०१)

जाउँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे

जाउँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे ।

काको नाम पतित-पावन जग, केहि अति दीन पियारे ।। १ ।।

कौने देव बराइ बिरद-हित, हठि हठि अधम उधारे ।

खग, मृग, ब्याध, पषान, बिटप, जड़, जवन कवन सुर तारे ।। २ ।।

देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज सब, माया-बिबस बिचारे ।

तिनके हाथ दासतुलसी प्रभु, कहा अपनपौ हारे ।। ३ ।।

(१०२)

हरि ! तुम बहुत अनुग्रह कीन्हों ।

साधन-धाम बिबुध दुरलभ तनु, मोहि कृपा करि दीन्हों ।। १ ।।

कोटिहुँ मुख कहि जात न प्रभुके, एक एक उपकार ।

तदपि नाथ कछु और माँगिहौं, दीजै परम उदार ।। २ ।।

बिषय-बारि मन-मीन भिन्न नहिं होत कबहुँ पल एक ।

ताते सहौं बिपति अति दारुन, जनमत जोनि अनेक ।। ३ ।।

कृपा-डोरि बनसी पद अंकुस, परम प्रेम-मृदु-चारो ।

एहि बिधि बेधि हरहु मेरो दुख, कौतुक राम तिहारो ।। ४ ।।

हैं श्रुति-बिदित उपाय सकल सुर, केहि केहि दीन निहोरै ।

तुलसिदास येहि जीव मोह-रजु, जेहि बाँध्यो सोइ छोरै ।। ५ ।।

(१०७)

है नीको मेरो देवता कोसलपति राम ।

सुभग सरोरुह लोचन, सुठि सुंदर स्याम ।। १ ।।

सिय-समेत सोहत सदा छबि अमित अनंग ।

भुज बिसाल सर धनु धरे, कटि चारु निषंग ।। २ ।।

बलिपूजा चाहन तहीं, चाहत एक प्रीति ।

सुमिरत ही मानै भलो, पावन सब रीति ।। ३ ।।

देहि सकल सुख, दुख दहै, आरत-जन-बंधु ।

गुन गहि, अघ-औगुन हरै, अस करुनासिंधु ।। ४ ।।

देस-काल-पूरन सदा बद बेद पुरान ।

सबको प्रभु, सबमें बसै, सबकी गति जान ।। ५ ।।

को करि कोटिक कामना, पूजै बहु देव ।

तुलसिदास तेहि सेइये, संकर जेहि सेव ।। ६ ।।

(१०८)

बीर महा अवराधिये, साधे सिधि होय ।

सकल काम पूरन करै, जानै सब कोय ।। १ ।।

बेगि, बिलंब न कीजिये लीजै उपदेस ।

बीज महा मंत्र जपिये सोई, जो जपत महेस ।। २ ।।

प्रेम-बारि-तरपन भलो, घृत सहज सनेहु ।

संसय-समिध, अगिनि छमा, ममता-बलि देहु ।। ३ ।।

अघ-उचाटि, मन बस करै, मारै मद मार ।

आकरषै सुख-संपदा-संतोष-बिचार ।। ४ ।।

जिन्ह यहि भाँति भजन कियो, मिले रघुपति ताहि ।

तुलसिदास प्रभुपथ चढ्यौ, जौ लेहु निबाहि ।। ५ ।।

(१२७)

मैं जानी, हरिपद-रति नाहीं । सपनेहुँ नहिं बिराग मन माहीं ।। १ ।।

जे रघुबीर चरन अनुरागे । तिन्ह सब भोग रोगसम त्यागे ।। २ ।।

काम-भुजंग डसत जब जाही । बिषय-नींब कटु लगत न ताही ।। ३ ।।

असमंजस अस हृदय बिचारी । बढ़त सोच नित नूतन भारी ।। ४ ।।

अब कब राम-कृपा दुख जाई । तुलसिदास नहिं आन उपाई ।। ५ ।।

(१५५)

बिस्वास एक राम-नामको ।

मानत नहिं परतीति अनत ऐसोइ सुभाव मन बामको ।। १ ।।

पढ़िबो पर्‌यो न छठी छ मत रिगु जजुर अथर्वन सामको ।

ब्रत तीरथ तप सुनि सहमत पचि मरै करै तन छाम को? ।। २ ।।

करम-जाल कलिकाल कठिन आधीन सुसाधित दामको ।

ग्यान बिराग जोग जप तप, भय लोभ मोह कोह कामको ।। ३ ।।

सब दिन सब लायक भव गायक रघुनायक गुन-ग्रामको ।

बैठे नाम-कामतरु-तर डर कौन घोर घन धामको ।। ४ ।।

को जानै को जैहै जमपुर को सुरपुर पर धामको ।

तुलसिहिं बहुत भलो लागत जग जीवन रामगुलामको ।। ५ ।।